विश्व संधिशोथ (अर्थराइटिस दिवस)

संधिशोथ : जागरूकता, रोकथाम और समग्र उपचार की आवश्यकता

सुनील कुमार वाजपेयी शिवम

प्रत्येक वर्ष 12 अक्तूबर को समूचे संसार में विश्व संधिशोथ (अर्थराइटिस) दिवस के रूप में मनाया जाता है। इसका मूल उद्देश्य जनमानस में संधियों से संबंधित रोगों के प्रति चेतना उत्पन्न करना है। हमारे देश में इसे सामान्य बोलचाल में गठिया, वातरोग, जोड़ों का दर्द आदि नामों से जाना जाता है। यह केवल वृद्धावस्था का रोग नहीं रहा, अब युवा वर्ग भी इसकी चपेट में आ रहा है।

गलत खानपान, शारीरिक श्रम का अभाव, घंटों तक एक ही स्थान पर बैठकर कार्य करना, मानसिक तनाव और प्रकृति से दूरी जैसे कारणों ने इस रोग को महामारी जैसा स्वरूप दे दिया है। ऐसे में इस दिवस का महत्व और अधिक बढ़ जाता है, क्योंकि यह हमें स्मरण कराता है कि स्वस्थ संधियाँ ही स्वस्थ जीवन का आधार हैं। बिना स्वस्थ संधियों के मनुष्य न तो ठीक से चल सकता है, न अपने दैनिक कार्य कर सकता है और न ही अपने परिवार तथा समाज के प्रति अपने दायित्वों का निर्वहन कर सकता है। पहले समझते हैं कि संधिशोथ क्या है ? हमारे शरीर में जहाँ दो अस्थियाँ मिलती हैं, उसे संधि कहते हैं। इन संधियों को सुचारू रूप से चलाने के लिए इनके बीच में एक चिकना पदार्थ, झिल्ली और तरल पदार्थ रहता है। जब किसी कारण से इस झिल्ली में सूजन आ जाती है, तरल पदार्थ सूखने लगता है अथवा अस्थियों के सिरे घिसने लगते हैं, तब जो पीड़ा और जकड़न उत्पन्न होती है, उसे संधिशोथ कहा जाता है। आयुर्वेद में इसे आमवात, संधिवात, वातरक्त जैसे नामों से वर्णित किया गया है। चिकित्सा शास्त्र में इसके सौ से अधिक प्रकार बताए गए हैं, परंतु मुख्य रूप से पाँच प्रकार अधिक प्रचलित हैं। पहला अस्थि संधिशोथ। यह सबसे अधिक पाया जाने वाला प्रकार है। इसमें संधियों की उपास्थि धीरे-धीरे घिस जाती है। अधिक आयु के लोगों में घुटनों, कूल्हों और रीढ़ में यह अधिक देखा जाता है। दूसरा आमवातीय संधिशोथ। यह शरीर की प्रतिरोधक क्षमता के भ्रमित होने से उत्पन्न होता है। इसमें शरीर की रक्षा प्रणाली ही अपनी संधियों पर आक्रमण करने लगती है। हाथों और पैरों की छोटी संधियों में सूजन, पीड़ा और ज्वर जैसे लक्षण उत्पन्न होते हैं। तीसरा गठिया वात। इसमें रक्त में यूरिक अम्ल नामक तत्व की मात्रा बढ़ जाती है। यह अम्ल छोटे-छोटे कणों के रूप में संधियों में एकत्र हो जाता है और असहनीय पीड़ा उत्पन्न करता है। प्रायः पैर के अंगूठे की संधि से इसका आरंभ होता है। चौथा किशोरावस्था संधिशोथ। यह सोलह वर्ष से कम आयु के बालक-बालिकाओं में पाया जाता है। इसमें संधियों में सूजन के साथ-साथ आँखों में जलन और ज्वर भी हो सकता है। पाँचवाँ मेरुदंड संधिशोथ। इसमें रीढ़ की अस्थियाँ आपस में जुड़ने लगती हैं, जिससे कमर झुक जाती है और उठने-बैठने में अत्यधिक कठिनाई होती है। इस रोग के अनेक कारण हैं। प्रथम कारण है अनुचित आहार। अत्यधिक तला-भुना, बासी भोजन, शीतल पेय, मैदे से बने पदार्थ और मांसाहार का अधिक सेवन। दूसरा कारण है आम का निर्माण। जब पाचन अग्नि मंद पड़ जाती है तो भोजन का ठीक से पाचन नहीं होता और शरीर में विषाक्त पदार्थ एकत्र हो जाते हैं, जो संधियों में जाकर रोग उत्पन्न करते हैं। तीसरा कारण है शारीरिक निष्क्रियता। आज के समय में वाहन, दूरभाष, संगणक जैसे

साधनों ने मनुष्य को एक ही स्थान पर बैठे रहने को विवश कर दिया है। संधियों में गति नहीं होने से वहाँ रक्त संचार बाधित होता है।चौथा कारण है स्थूलता। शरीर का भार अधिक होने पर घुटनों और कूल्हों की संधियों पर अधिक दबाव पड़ता है।पाँचवाँ कारण है चोट, अस्थि भंग अथवा किसी अन्य रोग का संक्रमण। छठा कारण है वंशानुगत प्रवृत्ति और मानसिक तनाव। इस रोग के प्रारंभिक लक्षणों को पहचानना अत्यंत आवश्यक है। प्रातः काल उठते ही संधियों में जकड़न का अनुभव होना, जो आधे घंटे से अधिक समय तक बनी रहे। संधियों में सूजन, लालिमा और स्पर्श करने पर उष्णता का अनुभव। किसी कार्य को करने पर संधि में चरमराहट की ध्वनि आना। निरंतर थकान, ज्वर, भूख में कमी और भार में कमी। यदि ये लक्षण तीन मास से अधिक समय तक बने रहें तो तुरंत किसी योग्य चिकित्सक से परामर्श लेना चाहिए। प्राचीन काल में वैद्य नाड़ी परीक्षण, स्पर्श परीक्षण और रोगी की जीवनचर्या के अध्ययन से निदान करते थे। वर्तमान समय में रक्त परीक्षण, अस्थि चित्रण, चुंबकीय अनुनाद चित्रण जैसी विधियों से रोग की स्थिति का पता लगाया जाता है। परंतु सर्वोत्तम विधि है रोगी से विस्तृत वार्ता, उसकी दिनचर्या, आहार, निद्रा और मानसिक स्थिति को समझना। इस रोग का कोई एक निश्चित उपचार नहीं है। इसका उपचार बहुआयामी होना चाहिए। आहार ,आहार ही औषधि है। संधिशोथ के रोगी को हल्का, सुपाच्य, उष्ण और स्निग्ध भोजन करना चाहिए। गेहूँ, पुराना चावल, मूंग की दाल, लौकी, परवल, सहजन, लहसुन, अदरक, हल्दी का प्रयोग हितकर है। दही, पनीर, उड़द की दाल, राजमा, छोले, अचार, अधिक नमक और खट्टे पदार्थों से बचना चाहिए। प्रातः काल गुनगुने जल में नींबू और शहद मिलाकर पीना, दिन भर पर्याप्त मात्रा में उष्ण जल का सेवन करना लाभकारी है। विहार और योग, नियमित व्यायाम संधिशोथ का शत्रु है। प्रतिदिन आधे घंटे तक धीमी गति से भ्रमण, ताड़ासन, वृक्षासन, वज्रासन, भुजंगासन जैसे योग अभ्यास, अनुलोम-विलोम और भ्रामरी प्राणायाम संधियों को लचीला बनाते हैं। ध्यान और प्रार्थना से मानसिक तनाव कम होता है, जिससे रोग के लक्षणों में कमी आती है। यह ध्यान रखना आवश्यक है कि तीव्र पीड़ा की अवस्था में भारी व्यायाम नहीं करना चाहिए। आयुर्वेदिक दृष्टिकोण ,आयुर्वेद के अनुसार संधिशोथ आम और वात के प्रकोप से होता है। अतः पाचन अग्नि को प्रदीप्त करना और वात का शमन करना ही मुख्य उपचार है। हरड़, सोंठ, अजवायन, गिलोय, अश्वगंधा, शल्लकी, निर्गुण्डी जैसी वनस्पतियाँ अत्यंत उपयोगी हैं। पंचकर्म के अंतर्गत बस्ती कर्म, पिंड स्वेद, पत्र पोटली स्वेद जैसे कर्मों से उत्तम परिणाम मिलते हैं। सरसों के तेल में लहसुन और अजवायन को पकाकर उस तेल से संधियों पर धीरे-धीरे मालिश करने से पीड़ा में आराम मिलता है। घरेलू उपाय, हल्दी और दूध का योग, मेथी के बीजों को रात्रि में भिगोकर प्रातः चबाना, सहजन के पत्तों का रस, निर्गुण्डी के पत्तों की पुल्टिस, गुनगुने जल से सिकाई जैसे सरल उपाय भी बहुत लाभ देते हैं। हमारे समाज में आज भी अनेक भ्रांतियाँ व्याप्त हैं। लोग संधिशोथ को केवल बुढ़ापे का रोग मानकर इसकी उपेक्षा करते हैं। अनेक लोग पीड़ा होने पर स्वयं ही पीड़ानाशक औषधियों का सेवन करने लगते हैं, जो कुछ समय के लिए आराम तो देती हैं, परंतु यकृत, वृक्क और हृदय पर गंभीर दुष्प्रभाव डालती हैं। विश्व संधिशोथ (आर्थराइटिस) दिवस हमें यह संदेश देता है कि समय पर निदान, उचित उपचार और जीवनशैली में परिवर्तन से इस रोग पर नियंत्रण पाया जा सकता है। विद्यालयों, महाविद्यालयों, ग्राम पंचायतों और सामाजिक संस्थाओं में इस विषय पर गोष्ठियों का आयोजन होना चाहिए। आशा कार्यकर्ता, आंगनबाड़ी कार्यकर्ता और पत्रकार बंधु इस चेतना को जन-जन तक पहुँचा सकते हैं। धार्मिक और सामाजिक केंद्रों पर भी स्वास्थ्य शिविर, योग शिविर और आयुर्वेदिक परामर्श शिविर आयोजित किए जाने चाहिए, जहाँ लोग निःशुल्क परामर्श प्राप्त कर सकें। अंत में यही कहना उचित होगा कि संधिशोथ अभिशाप नहीं है, बल्कि हमारी जीवनशैली में आए असंतुलन का परिणाम है। यदि हम समय पर जागरूक हो जाएँ, सात्विक आहार लें, नियमित व्यायाम करें, प्रकृति के निकट रहें, सकारात्मक सोच रखें और परस्पर सहयोग की भावना से कार्य करें, तो इस रोग से बचा जा सकता है। स्वस्थ संधियाँ, स्वस्थ शरीर और स्वस्थ शरीर से ही स्वस्थ समाज का निर्माण होता है। आइए, इस विश्व संधिशोथ दिवस पर हम सभी यह संकल्प लें कि हम स्वयं भी जागरूक होंगे और दूसरों को भी जागरूक करेंगे। अपनी प्राचीन चिकित्सा पद्धतियों, योग परंपरा और पारिवारिक संस्कारों को अपनाकर हम इस रोग को पराजित कर सकते हैं। यही सच्ची मानव सेवा होगी और यही माँ भगवती की सच्ची आराधना होगी।

Samsung Solve for Tomorrow 2026 में भारत के युवा इनोवेटर्स को मिलेगा अपनी प्रतिभा दिखाने का मौका

कई महीनों तक नए विचारों पर काम करने, मेंटरशिप लेने, प्रोटोटाइप बनाने और अपने आइडिया पेश करने के बाद, भारत के युवा इनोवेटर्स अब अपनी प्रतिभा दिखाने के लिए तैयार हैं। Samsung Solve for Tomorrow 2026 का ग्रैंड फिनाले 14 और 15 अक्टूबर को नई दिल्ली में आयोजित होगा। इसमें ञ्शश्च 20 टीमें असल जिंदगी की समस्याओं को हल करने के लिए तकनीक पर आधारित अपने समाधान पेश करेंगी। ये टीमें कुल 2 करोड़ रुपये की इनक्यूबेशन ग्रांट जीतने के लिए मुकाबला करेंगी। इस आर्थिक सहायता का उद्देश्य विजेता टीमों को अपने आइडिया को आगे बढ़ाने और उन्हें वास्तविक जीवन में उपयोगी बनाने में मदद करना है।

फाइनल में पहुंची टीमें चार विषयों पर अपने समाधान पेश करेंगी— AI Living for India, Health and Education, Environmental Sustainability Sport & Tech इन समाधानों का मूल्यांकन Samsung के वरिष्ठ अधिकारियों और शिक्षा जगत, सरकार तथा उद्योग जगत के विशेषज्ञों की जूरी करेगी।

अपने पांचवें संस्करण में Samsung Solve for Tomorrow 2026 देशभर के युवा इनोवेटर्स को एक साथ ला रहा है। ये युवा अपने आसपास की समस्याओं को पहचानकर तकनीक की मदद से उनका समाधान तैयार कर रहे हैं। Top 20 में शामिल आधे से ज्यादा प्रतिभागी टियर-2 और टियर-3 शहरों से हैं। फाइनल में पहुंची टीमें 12 राज्यों के 18 शहरों का प्रतिनिधित्व करती हैं। यह दिखाता है कि भारत में नए विचार और तकनीकी समाधान केवल बड़े टेक्नोलॉजी केंद्रों तक सीमित नहीं हैं, बल्कि छोटे शहरों और स्थानीय समुदायों से भी सामने आ रहे हैं।

Samsung Solve for Tomorrow एक वैश्विक मंच है, जो दुनिया भर के युवाओं को स्ञ्श्चरूयानी विज्ञान, तकनीक, इंजीनियरिंग और गणित की मदद से बेहतर भविष्य बनाने के लिए प्रेरित करता है। इसमें प्रतिभागी अपने समुदाय की समस्याओं की पहचान करते हैं और तकनीक का इस्तेमाल करके उनके रचनात्मक समाधान तैयार करते हैं।

ग्रैंड फिनाले इस पूरी यात्रा का महत्वपूर्ण पड़ाव है। इस दौरान प्रतिभागियों ने समस्याओं की पहचान करने और डिजाइन थिंकिंग के तरीके अपनाने से लेकर प्रोटोटाइप बनाने, विशेषज्ञों से मार्गदर्शन लेने और राष्ट्रीय स्तर पर अपने आइडिया पेश करने तक का सफर तय किया है। चार विजेता टीमों को Samsung की ओर से कुल 2 करोड़ रुपये की इनक्यूबेशन ग्रांट मिलेगी। इससे उन्हें अपने समाधानों को और बेहतर बनाने में मदद मिलेगी। साथ ही, IIT Delhi के FITT की ओर से उन्हें सीधे मेंटरशिप भी दी जाएगी।

जन-जन के मन की चाहत - जनप्रतिनिधि हो तो ऐसे हो...

वर्तमान दौर में प्रभावशाली राजनेताओं को जुझारू, दबंग, कद्दावर और संघर्षशील नेता के तौर पर महिमामंडित किया जाता है। ऐसे संबोधन को नेता लोग काफी पसंद भी किया करते हैं। एक अर्थ में इसे वह मानद उपाधि के रूप में लिया करते हैं। अपने नेता की दबंगई को लेकर समर्थक एवं कार्यकर्ता भी बहुत उत्साहित नजर आते है।

जिसके चलते नेता की ख्याति (?) का लाभ सीधे तौर पर उन्हें मिला करता है। वैसे राजनीति में हर एक नेता दबंग नहीं होता, कोई चिंतक, विचारक और नीति नियमों का पालनकर्ता भी हो सकते है, लेकिन ऐसे नेता के निर्वाचन क्षेत्र में आमतौर पर उपलब्धियों की कोई बड़ी सौगात नहीं मिला करती।

दरअसल आम नागरिक भी चाहते हैं कि उनका नेता ऐसा हो जो जैसा जी चाहे वैसा कर सकता हो। प्रशासन तंत्र पर उसका ऐसा दबदबा हो , कि कोई उसकी मंशा के विपरीत न जा सके। राजनीति के बदलते ट्रेंड के अनुसार तेजतर्रार नेता के क्षेत्र में अन्य क्षेत्रों की तुलना में विकास कार्यों की अधिकता नजर आती है। वैसे भी अब वह जमाना नहीं रहा जब धीर गंभीर राजनेता जन समूह में सम्मान पाया करते थे। अब तो स्थिति यह है कि जिसकी ऊपर तक पहुंच हो, वही चाहे तो क्षेत्र का भला कर सकता है। दरअसल आम नागरिकों की ऐसी धारणा ही बन गई है कि जब तक जनप्रतिनिधि की आवाज में वजन नहीं होगा, तब तक समस्याओं का बोझ भी कभी कम नहीं होगा।

अन्यथा सीधा-सच्चा नेता न तो अपने वालों का भला कर पाता है न दूसरों का भला कर पाता है। ऐसी सोच जो जनमानस में व्याप्त हो गई है, यही एक ऐसा कारण है कि राजनीति में धनबल के साथ बाहुबल की भी महत्ता बढ़ती चली जा रही है। यह एक विचारणीय प्रश्न है कि जुझारू और संघर्षशील तो ठीक, लेकिन यह दबंग और कद्दावर का क्या मतलब है ? यह कैसी उपाधि है, जो राजनेताओं के इतराने का कारण बन जाती है ? वैसे विसंगतियों के खिलाफ लंबी लड़ाई लड़ने वाला जुझारू कहा जा सकता है और अपनी नीति और सिद्धांतों पर अडिग रहकर चुनौतियों का सामना करने वाला संघर्षशील कहा जा सकता है।? आजकल के दौर में तेजतर्रार जनप्रतिनिधियों की लोकप्रियता तो स्पष्ट तौर पर देखी जा सकती है।

उक्त सदर्भ में यह सवाल उठता है कि यह दबंग और कद्दावर का क्या मतलब है ? बोलचाल की भाषा में दबदबा रखने वाले और ऊंची पहुंच रखने वाले दबंग या कद्दावर नेता कहे जा सकते है। सरकारी कार्य के ढर्रे को देखते हुए आम नागरिकों की भी यही चाहत होती है कि उनके क्षेत्र का निर्वाचित प्रतिनिधि दबंग या कद्दावर हो। ताकि जन समस्याएं आसानी से सुलझ सकें और विकास कार्यों की सौगात निरंतर क्षेत्र को मिलती रह सके। आमतौर पर सीधे-सच्चे जनप्रतिनिधि इस मामले में फिसड्डी साबित होते रहे हैं। यही कारण है कि आम नागरिक दबंग और कद्दावर नेता के प्रति अपना विशेष रुझान रखने लगे हैं। दरअसल प्रशासनिक निष्ठुरता पर नियंत्रण रखने के लिए जनप्रतिनिधि का दुधारू व संघर्षशील होना आम नागरिकों द्वारा आवश्यक समझे जाने लगा है।

यह जरूर है कि दबंग एवं कद्दावर राजनेता को अपनी राजनीति से ही सीधा मतलब होता है। ऐसे में नजदीकी समर्थकों एवं कार्यकर्ताओं को मनमानी करने की छूट भी मिल जाया करती है। हालांकि सभी राजनेता ऐसे नहीं होते, लेकिन अधिकांश ऐसे ही होते है, इस तथ्य एवं सत्य से अब आम नागरिक भी पूरी तरह अपरिचित नहीं रहे हैं। कहीं-कहीं तो अपनी फेंकफांक के आधार पर समर्थकों द्वारा शासन प्रशासन द्वारा चलाए जा रहे विकास कार्यों में सीधे तौर पर भागीदारी भी की जाने लगी है। हालांकि आम नागरिकों को इससे कोई सीधा मतलब नहीं होता कि कोई समर्थन या कार्यकर्ता किस कार्य को मूर्त रूप दे रखा है ?

दरअसल आम नागरिकों को बुनियादी सुविधाओं की उपलब्धि तथा आवश्यक विकास कार्यों से ही मतलब रहा करता है। व्यवहार में देखा गया है कि दबंग एवं कद्दावर नेता का इलाका सर्व सुविधा युक्त रहा करता है। एक बात यह भी है कि हर किसी सरकारी काम का अपना एक बंधा बंधाया ढर्रा है। जिसमें छोटे से छोटा काम भी कोई आसान नहीं है। एक सिस्टम है जो सिस्टम के साथ ही काम करता है। उस सिस्टम को समझना आम आदमी के बूते के बाहर की बात होती है। ऐसी स्थिति में अधिकारी और कर्मचारियों की पौ बारह हो जाती है। हर कोई अपेक्षा करने लगता है कि इसमें मेरा क्या ? यह स्थिति नीचे से ऊपर और ऊपर से नीचे हर तरफ व्याप्त है।

इस विषयक जिम्मेदार जानकर भी अनजान बनने का स्वांग रचा करते हैं। ऊपरी तौर पर नीति नियम की कितनी ही बातें कही जाती हो, लेकिन हकीकत कुछ और होती है। यही कारण है कि आम नागरिकों के मन में यह चाहत होती है कि उनका निर्वाचित प्रतिनिधि दबंग और कद्दावर हो, ताकि उनके क्षेत्र की बुनियादी आवश्यकताओं की तत्काल आपूर्ति सुनिश्चित हो सके। इसके अतिरिक्त विकास कार्य की श्रृंखला भी उनके क्षेत्र में अनवरत रूप से जारी रह सके। उनके क्षेत्र के काम किसी भी सरकारी नियमों की जटिलता के चलते उलझ कर नहीं रह जाएं। विभिन्न सरकारी अधिकारी एवं कर्मचारी अपने कार्य क्षेत्र में अनावश्यक रूप से अफसरशाही या लालफीताशाही का परिचय न देवें।

- राजेंद्र बज

माता शैलपुत्री का है प्रथम दिवस

वन्दे वांच्छितलाभाय
चन्द्रार्धकृतशेखराम।
वृषारूढ़ां शूलधरां शैलपुत्री
यशस्विनीम॥

मां दुर्गा अपने पहले स्वरूप में शैलपुत्री के नाम से जानी जाती हैं। पर्वतराज हिमालय के यहां पुत्री के रूप में उत्पन्न होने के कारण इनका यह शैलपुत्री नाम पड़ा था। वृषभ-स्थिता इन माता जी के दाहिने हाथ में त्रिशूल और बांये हाथ में कमल-पुष्प सुशोभित है। यही नव दुर्गाओं में प्रथम दुर्गा है। अपने पूर्वजन्म में ये प्रजापति दक्षकी कन्या के रूप में उत्पन्न हुई थी। तब इनका नाम सती था। इनका विवाह भगवान शंकर जी से हुआ था।

एक बार प्रजापति दक्ष ने एक बहुत बड़ा यज्ञ किया। इसमें उन्होंने सारे देवताओं को अपना-अपना यज्ञ भाग प्राप्त करने के लिये निमंत्रित किया। किंतु शंकर जी को उन्होंने इस यज्ञ में निमंत्रण नहीं भेजा। सती ने जब सुना कि हमारे पिता एक अत्यन्त विशाल यज्ञ का अनुष्ठान कर रहे हैं, तब वहां जाने के लिए उनका मन विकल हो उठा। अपनी यह इच्छा उन्होंने शंकर जी को बताई। सारी बातों पर विचार करने के बाद उन्होंने कहा- प्रजापति दक्ष किसी कारणवश हमसे रुष्ट हैं। अपने यज्ञ में उन्होंने सारे देवताओं को निमंत्रित किया है। उनके यज्ञ भाग भी उन्हें समर्पित किये हैं, किंतु हमें जान-बूझकर नहीं बुलाया है। कोई सूचना तक नहीं भेजी है। ऐसी स्थिति में तुम्हारा वहां जाना किसी प्रकार भी श्रेयस्कर नहीं होगा। शंकर जी के इस उपदेश से सती का प्रबोध नहीं हुआ। पिता का यज्ञ देखने, वहां जाकर माता और बहनों से मिलने की उनकी व्यग्रता किसी प्रकार भी कम न हो सकी। उनका प्रबल आग्रह देखकर भगवान शंकर जी ने उन्हें वहां जाने की अनुमति दे दी।

सती ने पिता के घर पहुंचकर देखा कि कोई भी उनसे आदर और प्रेम के साथ बात-चीत नहीं कर रहा है। सारे लोग मुंह फेरे हुए हैं। केवल उनकी माता ने स्नेह से उन्हें गले लगाया। बहनों की बातों में व्यंग्य और उपहास के भाव भरे हुए थे। परिजनों के इस व्यवहार से उनके मान-सम्मान को बहुत क्लेश पहुंचा। उन्होंने यह भी देखा कि वहां चतुर्दिक भगवान शंकर जी के प्रति तिरस्कार का भाव भरा हुआ है। दक्ष ने उनके प्रति कुछ अपमान जनक वचन भी कहे। यह सब देखकर सती का हृदय क्षोभ, ग्लानि और क्रोध से संतप्त हो उठा। उन्होने सोचा भगवान शंकर जी की बात न मान, यहां आकर मैने बहुत बड़ी गलती की है। वह अपने पति भगवान शंकर के इस अपमान को सह नहीं सकी। उन्होंने अपने उस रूप को तत्क्षण वही योगाग्नि द्वारा जलाकर भस्म कर दिया। वज्रपात के समान इस दारुण-दुःखद घटना को सुनकर शंकर जी ने क्रुद्ध हो अपने गुणों को भेजकर दक्ष के उस यज्ञ का पूर्णतः विध्वंस करा दिया।

सती ने योगाग्नि द्वारा अपने शरीर को भस्म कर अगले जन्म में शैलराज हिमालय की पुत्री के रूप में जन्म लिया। इस बार वह शैलपुत्री नाम से विख्यात हुईं। पार्वती, हैमवती भी उन्हीं के नाम है। उपनिषद की एक कथा के अनुसार उन्होंने हैमवती स्वरूप से देवताओं का गर्व-भंजन किया था। शैलपुत्री देवी का विवाह भी शंकर जी से ही हुआ। पूर्वजन्म की भांति इस जन्म में भी वह शिवजी की अर्धांगिनी बनीं। नवदुर्गाओं में प्रथम शैलपुत्री दुर्गा का महत्व और शक्तियां अनन्त हैं। नवरात्र पूजन में प्रथम दिवस इन्हीं माता की पूजा और उपासना की जाती है। इस प्रथम दिन की उपासना में योगी अपने मन को मूलाधार चक्र में स्थित करते है। यहीं से उनकी योग साधना का प्रारंभ होता है।

आत्माराम यादव पीव वरिष्ठ पत्रकार
श्रीजगन्नाथ धाम काली मंदिर के पीछे ग्वालटोली
नर्मदापुरम मध्यप्रदेश
मोबाईल 9993376616

जय मां भगवती ग्रुप ने की घटस्थापना, नवरात्रि में प्रतिदिन होगा गरबा

बाड़मेर। शारदीय नवरात्रि के प्रथम दिन जय मां भगवती ग्रुप की ओर से रेन बसेरा के पीछे, गली नंबर 02, बाड़मेर के तत्वावधान में रविवार को प्रातः 10.30 बजे शुभ मुहुर्त में विधि-विधान के साथ घट स्थापना की गई।

इस अवसर पर मां भगवती की पूजा-अर्चना कर नवरात्रि महोत्सव का शुभारंभ किया गया। जय मां भगवती ग्रुप के सदस्य अनिल छाजेड़ ने बताया कि जय मां भगवती ग्रुप पिछले 04 वर्षो से लगातार रेन बसेरा के पीछे गली नम्बर 02 में नवरात्रि को गरबा का कार्यक्रम आयोजित करवा रहा है

और इस बार भी माता की आराधना के लिए ग्रुप की ओर से गरबा नृत्य का आयोजन करवा रहा है। छाजेड़ ने बताया कि जय मां भगवती ग्रुप की ओर से नवरात्रि को घट स्थापना के दौरान माताजी की प्रतिमा को ढोल-ढमाके के साथ गरबा प्रांगण में लाया गया और पूजा अर्चना के बाद आरती की गई। कार्यक्रम में श्रद्धालु पारंपरिक वेशभूषा में गरबा एवं डांडिया के माध्यम से मां भगवती की आराधना करेंगे। नवरात्रि को लेकर क्षेत्र में उत्साह का माहौल है। आयोजन के माध्यम से धार्मिक आस्था के साथ भारतीय संस्कृति एवं पारंपरिक गरबा नृत्य को प्रोत्साहित किया जाएगा।

प्रेषक-कपिल मालू